टिप्पणी

9

मध्यकालीन भारत में धर्म और दर्शन

प्राय: प्रत्येक माह शहर में किसी प्रेक्षागृह (सभागार) में कार्यक्रम होते रहते हैं जहाँ सूफी सन्तों के और भक्ति सन्तों के गीत गाए जाते हैं। इन कार्यक्रमों की लोकप्रियता वहां की उपस्थिति से देखी जा सकती है। वे सरकार द्वारा, व्यापार गृहों द्वारा, और अलग अलग व्यक्तियों द्वारा भी चलाये जाते हैं। सूफी और भक्ति संतों के संगीत आज भी उपयोगी हैं। क्या आप जानते हैं कि भारत में मध्यकालीन युग में सूफी आन्दोलन और भक्ति आन्दोलन की उन्नति और विकास हुआ? इन आन्दोलनों के कारण हिन्दू एवम् मुस्लिम समुदाय में एक नई आध्यात्मिक क्रांति हुई। सूफी फकीरों ने इस्लाम में उदारवाद की माँग की तथा सार्वभौमिक प्रेम के आधार पर एक समतावादी समाज पर बल दिया। भक्ति संतों ने भगवान को पाने के लिए भक्ति करने का प्रचार करके हिन्दू धर्म को बदल दिया। उनके लिए जाति का कोई अर्थ नहीं था और सभी मानव उनके लिए बराबर थे। सूफी एवं भक्ति संतों ने मुसलमानों एवं हिन्दुओं को साथ लाने में एक अहम भूमिका निभाई। उन्होंने स्थानीय भाषाओं का प्रयोग करके धर्म को सुलभ एवं सार्थक बनाया।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप :–

- मध्यकालीन भारत में सूफी और भक्ति आन्दोलनों के उदय के कारणों को समझेंगे;
- सूफी आन्दोलन के विकास को समझेंगे;
- प्रमुख सूफी सिलसिलों की पहचान कर पाएँगे;
- सूफीवाद के मुख्य सिद्धान्तों की पहचान कर पायेंगे;

टिप्पणी

- भक्ति संतों के दर्शन की व्याख्या कर पाएँगे;
- भक्ति संतों, संत कबीर और गुरु नानक के दर्शनों की व्याख्या कर पाएँगे;
- सिक्ख धर्म के उदय को जान सकेंगे;
- वैष्णव संतों की विचारधारा की व्याख्या कर सकेंगे;
- भारतीय मिश्रित संस्कृति के विकास में सूफी एवं भक्ति संतों के योगदानों की पहचान कर पाएँगे।

9.1 सूफी आन्दोलन

पृष्ठभूमि — इस्लाम का उदय

आपको याद होगा कि इस्लाम धर्म की नीवं पैगम्बर मुहम्मद साहब ने डाली थी। इस्लाम धर्म ने अपने अन्दर कई धार्मिक और आध्यात्मिक आन्दोलनों का उदय देखा। ये आन्दोलन प्रमुख रूप से कुरान की व्याख्या पर आधारित थे। इस्लाम के अन्दर दो प्रमुख सम्प्रदायों का उदय हुआ — सुन्नी और शिया। हमारे देश में दोनों मत हैं लेकिन कई अन्य देशों में जैसे ईरान, ईराक, पाकिस्तान आदि देशों में आप केवल एक ही मत के अनुयायियों को देख पाएँगे।

सुन्नी संप्रदाय में इस्लामी कानून की चार प्रमुख विचारधाराएँ हैं। ये कुरान और हदीस (हजरत मुहम्मद साहब के कार्य और कथन) पर आधारित हैं। इनमें से आठवीं शताब्दी की इनकी विचारधारा को पूर्वीतुर्कों ने अपनाया और यही तुर्क बाद में भारत में आए।

पुरातनवंशी सुन्नी समुदाय को सबसे बड़ी चुनौती मुताजिला अर्थात तर्कप्रधान दर्शन ने दी जो कठोर एकेश्वरवाद का प्रतिपादक था। इस मत के अनुसार ईश्वर न्यायकारी है और मनुष्यों के दुष्कर्मों से उसका कोई लेना देना नहीं है। मनुष्यों के पास अपनी स्वतन्त्र इच्छा शक्ति है और वे स्वयं अपने कर्मों के लिए उत्तरदायी हैं। मुताजिलों का विरोध अशरी विचारधारा ने किया। अबुल हसन अशरी (873-935 ई.पू.) द्वारा स्थापित अशरी विचारधारा ने पुरातन पंथी सिद्धान्त के समर्थन में अपने बुद्धिवादी दर्शन (कलाम) को विकसित किया। इस विचारधारा के अनुसार ईश्वर जानता है, देखता है और बात भी करता है। कुरान शाश्वत है और स्वयंभू है। इस विचारधारा के सबसे बड़े विचारक थे अबू हमीद अल गजाली (1058-1111) जिन्होंने रहस्यवाद और इस्लामी परम्परावाद के बीच मेल कराने का प्रयत्न किया। वह एक महान धर्म विज्ञानी थे जिन्होंने 1095 में एक सूफी का जीवन व्यतीत करना प्रारम्भ किया। उन्हें परम्परावादी तत्वों और सूफी मतावलम्बियों दोनों के द्वारा ही बहुत अधिक सम्मानपूर्वक देखा जाता था। अल गजली ने सभी गैरपरम्परावादी सुन्नी विचारधाराओं पर आक्रमण किया। वे कहते थे सकारात्मक ज्ञान तर्क द्वारा नहीं प्राप्त किया जा सकता बल्कि आत्मानुभूति द्वारा ही देखा जा सकता है। सूफी भी उलेमाओं की भांति ही कुरान पर निष्ठा रखते थे।

राज्य द्वारा स्थापित नई शिक्षा प्रणाली के कारण गजाली के विचारों का प्रभाव बहुत अधिक पड़ा। इसके अन्तर्गत मदरसों की स्थापना हुई जहां विद्वानों को अशरी विचारधारा से परिचित करवाया जाता था। उन्हें यहाँ पुरातनपन्थी सुन्नी विचारों के अनुसार शासन चलाने की शिक्षा दी जाती थी। इन विद्वानों को उलेमा कहते थे। उलेमाओं ने मध्य भारत की राजनीति में महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया।

सूफी

उलेमा के ठीक विपरीत सूफी थे। सूफी रहस्यवादी थे। वे पवित्र धर्मपरायण पुरुष थे, जो राजनैतिक व धार्मिक जीवन के अध:पतन पर दु:खी थे। उन्होंने सार्वजनिक जीवन में धन के अभद्र प्रदर्शन व 'धर्म भ्रष्ट शासकों' की उलेमा द्वारा सेवा करने की तत्परता का विरोध किया। कई लोग एकान्त तपस्वी जीवन व्यतीत करने लगे एवं राज्य से उनका कोई लेना-देना नहीं रहा। सूफी दर्शन भी उलेमा से भिन्न था। सूफियों ने स्वतंत्र विचारों एवं उदार सोच पर बल दिया। वे धर्म में औपचारिक पूजन, कठोरता एवं कट्टरता के विरुद्ध थे। सूफियों ने धार्मिक संतुष्टि के लिए ध्यान पर जोर दिया। भक्ति संतों की तरह, सूफी भी धर्म को 'ईश्वर के प्रेम' एवं मानवता की सेवा के रूप में परिभाषित करते थे। कुछ समय में सूफी विभिन्न सिलसिलों (श्रेणियों) में विभाजित हो गए। प्रत्येक सिलसिले में स्वयं का एक पीर (मार्गदर्शक) था जिसे ख्वाजा या शेख भी कहा जाता था। पीर व उसके चेले खानका (सेवागढ़) में रहते थे। प्रत्येक पीर अपने कार्य को चलाने के लिए उन चेलों में से किसी एक को वली अहद (उत्तराधिकारी) नामित कर देता था। सूफियों ने रहस्यमय भावातिरेक जगाने के लिए समां (पवित्र गीतों का गायन) संगठित किए। ईराक में बसरा सूफी गतिविधियों का केन्द्र बन गया। यह ध्यान देने की बात है कि सूफी संत एक नया धर्म स्थापित नहीं कर रहे थे अपितु इस्लामी ढांचे के भीतर ही एक अधिक उदार आन्दोलन प्रारम्भ कर रहे थे। कुरान में उनकी निष्ठा उतनी ही थी जितनी उलेमाओं की।

भारत में सूफीमत

भारत में सूफी मत का आगमन 11वीं और 12वीं शताब्दी में माना जाता है। भारत में बसे श्रेष्ठ सूफियों में से एक थे — अल हुजवारी जिनका निधन 1089 ई. में हो गया। उन्हें दाता गंजबख्श (असीमित खजाने के वितरक) के रूप में जाना जाता है। प्रारंभ में, सूफियों के मुख्य केन्द्र मुल्तान व पंजाब थे। परंतु 13वीं व 14वीं सदी तक सूफी कश्मीर, बिहार, बंगाल एवं दक्षिण तक फैल चुके थे। यह उल्लेखनीय है कि भारत में आने से पूर्व ही सूफीवाद ने एक निश्चित रूप ले लिया था। उसके मौलिक एवं नैतिक सिद्धांत, शिक्षण एवं आदेश प्रणाली, उपवास, प्रार्थना एवं खानकाह में रहने की परम्परा पहले से ही तय हो चुकी थी। सूफी अपनी इच्छा से अफगानिस्तान के माध्यम से भारत आए थे। उनके शुद्ध जीवन, भक्तिप्रेम व मानवता के लिए सेवा जैसे विचारों ने उन्हें लोकप्रिय बना दिया तथा भारतीय समाज में उन्हें आदर सम्मान भी दिलवाया।

टिप्पणी

अबुल फजल ने 'एआइने-ए-अकबरी' में सूफियों के 14 सिलसिलों का उल्लेख किया है। बहरहाल, इस पाठ में हम कुछ महत्त्वपूर्ण सिलसिलों का ही उल्लेख करेंगे। ये सिलसिले दो प्रकार के थे बेशरा और बाशरा। बाशरा के अन्तर्गत वे सिलसिले थे जो शरा (इस्लामी कानून) को मानते थे और नमाज, रोजा आदि नियमों का पालन करते थे। इनमें प्रमुख थे चिश्ती, सुहरावर्दी, फिरदौसी, कादिरी व नख्शबंदी सिलसिले थे। बे-शरा सिलसिलों में शरीयत के नियमों को नहीं मानते थे। कलन्दर, फिरदौसी, सिलसिल इसी समूह से संबंधित थे।

चिश्ती सिलसिला

यह सिलसिला ख्वाजा चिश्ती (हेरात के निकट) नामक गाँव में स्थापित किया गया था। भारत में चिश्ती सिलसिला ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती (जन्म 1142 ई) द्वारा स्थापित किया गया था, जो 1192 ई. में भारत आए थे। उन्होंने अजमेर को अपनी शिक्षाओं का मुख्य केन्द्र बनाया। उनका मानना था कि भक्ति का सबसे अच्छा तरीका मनुष्य की सेवा है और इसीलिए उन्होंने दलितों के बीच काम किया। उनकी मृत्यु 1236 ई में अजमेर में हुई। मुगल काल के दौरान अजमेर एक प्रमुख तीर्थ केन्द्र बन गया क्योंकि मुगल सम्राट नियमित रूप से शेखों की दरगाहों का दौरा किया करते थे। उनकी लोकप्रियता का अनुमान इसी बात से लगाया जा सकता है कि आज भी लाखों मुसलमान और हिन्दू अपनी इच्छा की पूर्ति के लिए दरगाह का दौरा किया करते हैं। नागौर के शेख हमीदुद्दीन और कुतुबद्दीन बख्तियार काकी उनके चेले थे। शेख हमीदुद्दीन एक गरीब किसान थे और उन्होंने इल्तुतमीश द्वारा गांवों के दान लेने से इंकार कर दिया। कुतुबद्दीन बख्तियार काकी की खानकाह का कई क्षेत्रों के लोगों ने दौरा किया। सुल्तान इल्तुतमीश ने कुतुबमीनार को अजोधन के शेख फरीदउद्दीन को सपर्पित किया। जिन्होंने चिश्ती सिलसिलों को आधुनिक हरियाणा और पंजाब में लोकप्रिय किया। उन्होंने सभी के लिए प्यार एवं उदारता का दरवाजा खोला। बाबा फरीद (उन्हें इसी के नाम से जाना जाता था) का हिन्दुओं एवं मुसलमानों के द्वारा सम्मान किया जाता था। पंजाबी में लिखे गए उनके छन्दों को आदि ग्रंथ में उद्धृत किया गया।

बाबा फरीद के सबसे प्रसिद्ध शिष्य शेख निजामुद्दीन औलिया (1238-1325 ई.) ने दिल्ली को चिश्ती सिलसिले का महत्वपूर्ण केन्द्र बनाने का उत्तरदायित्व सम्भाला। वह 1259 ई. में दिल्ली आये थे और दिल्ली में अपने 60 वर्षों के दौरान उनहोंने 7 सुलतानों का शासन काल देखा उन्हें राज्य के शासको और रईसों के साथ से और राजकाज से दूर रहना पसंद था। उनके लिए गरीबों को भोजन एवं कपड़ा वितरित करना ही त्याग था। उनके अनुयायियों के बीच विख्यात लेखक अमीर खुसरों भी थे। एक अन्य प्रसिद्ध चिश्ती संत शेख नसीरूद्दीन महमूद थे जो नसीरूद्दीन चिराग-ए-दिल्ली के नाम से लोकप्रिय थे। उनकी मृत्यु 1356 ई में हुई और उत्तराधिकारियों के अभाव के कारण चिश्ती सिलसिले के चेले पूर्वी और दक्षिणी भारत की ओर चले गए।

सुहरवर्दी सिलसिला

यह सिलसिला शेख शिहाबुद्दीन सुहरावर्दी द्वारा स्थापित किया गया था। यह भारत में शेख बहाउद्दीन जकारिया (1182-1262) द्वारा स्थापित किया गया था। उसने मुल्तान में एक अग्रणी खानख्वाह की व्यवस्था की जिसका शासक, उच्च सरकारी अधिकारी एवं अमीर व्यापारी दौरा किया करते थे। शेख बहाउद्दीन जकारिया ने खुलकर कबाचा के विरुद्ध इल्तुतमिश का पक्ष लिया एवं उससे शेख-उल-इस्लाम (इस्लाम के नेता) की उपाधि प्राप्त की। ध्यान दें कि चिश्ती संतों के विपरीत, सुहरावर्दियों ने राज्य के साथ निकट संपर्क बनाए रखा। उन्होंने उपहार, जागीरें और यहाँ तक की चर्च संबंधित विभाग में भी सरकारी नौकरियाँ स्वीकार कीं। सुहरावर्दी सिलसिला दृढ़ता से पंजाब और सिंध में स्थापित हो गया था। इन दो सिलसिलों के अतिरिक्त फिरदौसी सिलसिला, शतारी सिलसिला, कादिरी सिलसिला एवं नख्शबंदी सिलसिला भी थे।

9.2 सूफी आंदोलन का महत्व

सूफी आन्दोलन ने भारतीय समाज में महत्त्वपूर्ण योगदान किया। भक्ति संतों की तरह, जो कि हिन्दू धर्म के भीतर अन्धविश्वासों को तोड़ने में लगे हुए थे, सूफियों ने भी इस्लाम के भीतर एक नए उदारवादी दृष्टिकोण का प्रचार किया। प्राचीन भक्ति एवं सूफी विचारों के बीच अन्तर्व्यवहार ने 15वीं सदी में अधिक उदार आंदोलनों की नीवं रखी। आप पढ़ेंगे कि संत कबीर एवं गुरु नानक जी ने सार्वभौमिक प्रेम पर आधारित गैर सांप्रदायिक धर्म का प्रचार किया। सूफी वहादत-उल-वजूद (प्राणियों की एकता) की अवधारणा में विश्वास करते थे जिसको इब्न-ए-अरबी (1165-1240) द्वारा बढ़ावा दिया गया। उन्होंने कहा कि सभी प्राणियों का अस्तित्व है। विभिन्न धर्म एक समान हैं। इस सिद्धान्त को भारत में प्रसिद्धि मिली। सूफियों और भारतीय योगियों के बीच विचारों का उपयुक्त आदान-प्रदान होता था। यहाँ तक कि हठ-योग ग्रंथ अमृत कुण्ड का अरबी एवं फारसी में अनुवाद किया गया। सूफियों का उल्लेखनीय योगदान समाज के गरीब एवं दलित वर्गों की सेवा में रहा। यद्यपि सुल्तान व उलेमा अधिकतर लोगों की दैनिक समस्याओं से अलग रहे। सूफी सन्तों ने जनता से निकट संपर्क बनाए रखा। निजामुद्दीन औलिया जरूरतमंद लोगों के बीच उपहार के वितरण के लिए प्रसिद्ध थे। चाहे वे लोग किसी भी धर्म या जाति के हों। यह कहा जाता है कि वे तब तक विश्राम नहीं करते थे जब तक वह खानख्वाह पर आने वाले प्रत्येक आगंतुक की प्रार्थना नहीं सुन लेते थे। सूफियों के अनुसार ईश्वर की भक्ति करने का सर्वोच्च ढंग मानवता की सेवा थी। वे हिन्दू एवं मुसलमानों के साथ समान व्यवहार करते थे। अमीर खुसरो ने कहा है "हालांकि हिन्दू धर्म मेरी तरह नहीं है, परन्तु वह भी उन्हीं मान्यताओं में विश्वास करता है जिसमें मैं करता हूँ।"

सूफी आन्दोलन समानता और भाईचारे पर बल देता था। वस्तुत: इस्लाम धर्म द्वारा जो बल समानता पर दिया जाता था, उसका सम्मान उलेमाओं की अपेक्षा सूफी सन्त ही अधिक करते थे। सूफी सिद्धान्तों की रूढ़िवादियों द्वारा निन्दा की जाती थी। सूफी भी उलेमाओं की

टिप्पणी

निन्दा करते थे। वे सोचते थे कि उलेमा लोग भी लालच में फंसकर दुनियादारी में फंस चुके हैं ओर कुरान के मौलिक, प्रजातान्त्रिक और समतावादी सिद्धान्तों से परे जा रहे हैं यह रूढ़िवादी और उदारवादियों के बीच का यह संघर्ष सोलहवीं, सतरहवी और अठारहवीं शताब्दी तक जारी रहा। सूफी सन्तों ने सामाजिक सुधार भी लाने के प्रयत्न किए।

भक्ति संतों की तरह, सूफी संतों ने भी क्षेत्रीय साहित्य के विकास के लिए काफी योगदान किया। सूफी संतों में अधिकतर संत कवि थे जिन्होंने स्थानीय भाषाओं को लेखन के लिए चुना। बाबा फरीद ने धार्मिक कार्यों के लिए पंजाबी के उपयोग को चुना। शेख हमीदुद्दीन, इससे पहले, हिन्दवी में लिखते थे। उनके छन्द रहस्यमय फारसी कविता के प्रारम्भिक हिन्दवी अनुवाद का सबसे उत्तम उदाहरण हैं। सैयद गेसु दराज दक्षिणी हिन्दी के प्रथम लेखक थे। वे सूफीवाद को स्पष्ट करने के लिए फारसी भाषा से अधिक हिन्दी को अभिव्यक्ति के लिए अधिक उपयुक्त मानते थे। बहुत से सूफी ग्रन्थ बंगाली में भी लिखे गये।

निजामुद्दीन औलिया के अनुयायी अमीर खुसरो (1252-1325 ई.) इस समय के सबसे उल्लेखनीय लेखक थे। अमीर खुसरो को अपने भारतीय होने पर गर्व था। वे हिन्दुस्तान के इतिहास व संस्कृति को अपनी परंपरा के अंश के रूप में देखते थे। उन्होंने हिन्दी में छंद लिखे व फारसी छंदों का हिन्दी में प्रयोग किया। उन्होंने सबक-ए-हिन्दी के नाम से एक नई शैली बनाई। पंद्रहवीं सदी तक हिन्दी ने एक निश्चित आकार ग्रहण करना शुरू कर दिया था। कबीर एवं अन्य भक्ति सन्त हिन्दी का बड़े पैमाने पर उपयोग करने लगे थे।

पाठगत प्रश्न 9.1

1. 'उलेमा' कौन थे?

   .....

2. 'कलाम' से आप क्या समझते हैं?

   .....

3. दाता गंज बख्स कौन थे?

   .....

4. आइने-ए-अकबरी में कितने सिलसिलों के विषय में बताया गया है?

   .....

5. ख्वाजा-मुईनुद्दीन चिश्ती खानकाह कहाँ स्थित है?

   .....

टिप्पणी

6. इस्लामी कानून का अन्य नाम क्या है?

.....

7. किसे चिराग-ए-दिल्ली (दिल्ली का चिराग) कहा जाता है?

.....

9.3 भक्ति आंदोलन

भक्ति आंदोलन का विकास सातवीं और बारहवीं शताब्दी के बीच तमिलनाडु में हुआ। यह नयनार (शिव भक्त) एवं अलवर (विष्णु भक्त) की भावनात्मक कविताओं में परिलक्षित होता है। ये संत धर्म को केवल औपचारिक पूजा के रूप में नहीं अपितु एक प्रिय बंधन के रूप में देखते थे जो कि उपास्य व उपासक के बीच के प्रेम पर निर्भर है। वे स्थानीय भाषाओं तमिल एवं तलुगु में लिखते थे अत: वे अधिक से अधिक लोगों तक अपनी बात पहुंचाने में समर्थ हुए।

समय के साथ, दक्षिण के विचार उत्तर तक पहुँच गए परंतु ये बहुत ही धीमी प्रक्रिया थी। संस्कृत, जो विचारों की प्रेषिका थी, उसे भी नया रूप दिया गया। इसी से यह पता चलता है कि भागवद् पुराण (नौंवी शताब्दी) प्राचीन पौराणिक रूप में नहीं लिखा गया। कृष्ण के बचपन एवं यौवन की घटनाओं पर केन्द्रित, इस रचना ने कृष्ण के कृत्यों का उपयोग सरल शब्दों में गहन दर्शन समझाने के लिए किया। यह रचना वैष्णवी आंदोलन के इतिहास में महत्त्वपूर्ण मोड़ साबित हुई जो कि भक्ति आंदोलन का महत्वपूर्ण घटक था।

भक्ति विचारधारा के प्रसार के लिए एक प्रभावी तरीका स्थानीय भाषाओं का उपयोग था। भक्ति संतों ने अपने छंदों की रचना स्थानीय भाषाओं में की। उन्होंने संस्कृत में की गई रचनाओं का भी हिन्दी में अनुवाद किया जिससे व्यापक रूप से जनता उन्हें समझ सके। इस प्रकार ज्ञानदेव ने मराठी में लिखा, कबीर, सूरदास एवं तुलसीदास ने हिन्दी में अपने ग्रंथ लिखे। दूसरी ओर शंकरदेव असमी को लोकप्रिय बना रहे थे। चैतन्य व चंडीदास बंगाली में संदेश का प्रसार कर रहे थे तो मीराबाई हिन्दी व राजस्थानी में। इसके अतिरिक्त भक्ति कविताओं की रचना कश्मीरी, तेलुगु, कन्नड़, उड़िया, मलयालम, मराठी व गुजराती भाषा में भी की गई।

भक्ति संतों का यह विश्वास था कि सभी मोक्ष प्राप्त कर सकते हैं। वे भगवान के समक्ष सम्प्रदाय, जाति या धर्म में भेदभाव नहीं करते थे। वे स्वयं विविध पृष्ठभूमि से आए थे। रामानन्द जिनके शिष्यों में हिन्दु और मुसलमान दोनों ही होते थे, स्वयं एक ब्राह्मण परिवार से थे। उनका शिष्य कबीर एक बुनकर था। गुरू नानक गाँव के मुंशी के पुत्र थे। नामदेव दर्जी थे। संतों ने समानता पर बल दिया, जाति व्यवस्था की अवहेलना की और संस्थागत

टिप्पणी

धर्म का विरोध किया। संतों ने स्वयं को विशुद्ध धार्मिक विचारों तक ही सीमित नहीं रखा। उन्होंने सामाजिक सुधारों का भी समर्थन किया। उन्होंने सती व कन्या भ्रूण हत्या का विरोध किया। महिलाओं को कीर्तन में सम्मित होने के लिए प्रोत्साहित किया गया। मीराबाई एवं लल्ला (कश्मीर) के रचे हुए छंद आज भी लोकप्रिय हैं।

गैर सांप्रदायिक भक्ति संतों के बीच, सबसे उत्कृष्ट योगदान कबीर व गुरुनानक द्वारा दिया गया। हिन्दू एवं मुसलमानों के बीच की खाई पाटने के उद्देश्य से इनके विचार दोनों हिन्दू व मुस्लिम परंपराओं से लिए गए। अब हम इनके विषय में विस्तार से पढ़ेंगे।

कबीर (1440 ई. - 1518 ई.) एक ब्राह्मण विधवा के पुत्र माने जाते हैं जिसने उनका परित्याग कर दिया था। उनका पालन पोषण एक मुस्लिम बुनकर के घर में हुआ। कबीर मानते थे कि ईश्वर तक पहुँचने की राह व्यक्तिगत रूप से की गई भक्ति के अनुभव के माध्यम से है। उनका मानना था कि निर्माता एक है। वे परमेश्वर को कई नामों से बुलाते थे — राम, हरि, गोविन्द, अल्लाह, रहीम, खुदा इत्यादि। इसमें कोई आश्चर्य नहीं है कि मुस्लिम उन्हें सूफी, तो हिन्दू उन्हें राम-भक्त कहते थे। सिखों ने उनके भजनों को आदि ग्रंथ में शामिल किया। कबीर के लिए धर्म के बाहरी पहलू व्यर्थ थे। उनके विचार तथा विश्वास उनके द्वारा रचे गए दोहों में प्रतिबिम्बित होते थे। उनके एक दोहे में बताया गया है कि यदि पत्थर को पूजने से ईश्वर मिलते हैं तो मैं पर्वत को क्यों न पूजूं। इससे अच्छा तो एक आटे की चक्की का पूजन है, क्योंकि कम से कम उससे एक परिवार का पेट तो भरता है।

कबीर ने धर्म में सादगी पर बल दिया और कहा कि भगवान को पाने का सबसे आसान तरीका भक्ति है। उन्होंने किसी तर्क के बिना किसी भी प्रचलित धार्मिक विश्वास को स्वीकार करने से इन्कार कर दिया। उनके अनुसार एक व्यक्ति कड़ी मेहनत किए बिना सफलता प्राप्त नहीं कर सकता। कर्तव्य के त्याग की अपेक्षा में उन्होंने कर्म करने पर बल दिया। कबीर के एक भगवान में विश्वास के कारण दोनों हिन्दू और मुसलमान उनके शिष्य बन गए। कबीर के विचार किसी धर्म से संबंधित नहीं थे। उन्होंन समाज की संकीर्ण सोच को बदलने का प्रयास किया। उनकी कविताएँ सशक्त एवं सीधी सादी थी। ये कविताएँ आसानी से समझी जा सकती थीं और इनमें से कई तो हमारी रोजमर्रा की भाषा में ही लिखी गई हैं।

ननकाना पंथ के एक अन्य महानप्रतिपादक थे **गुरु नानक** (1469 ई. - 1539 ई.)। उनका जन्म तलवंडी (ननकाना साहिब) में हुआ। बचपन से ही आध्यात्मिक जीवन के प्रति उनका झुकाव था। वे दरिद्र एवं जरूरतमंद लोगों की सहायता करते थे। उनके शिष्य स्वयं को सिख कहते थे। (संस्कृत में शिष्य, पालि में शिखा — शिक्षा)।

गुरु नानक का व्यक्तित्व अपने आप में सादगी और शांति की मूर्त्ति था। उनका उद्देश्य समाज में मौजूदा भ्रष्टाचार एवं अपमानजनक प्रथाओं को दूर करना था। उन्होंने एक समतावादी सामाजिक व्यवस्था की स्थापना के लिए एक नया रास्ता दिखाया। कबीर की तरह ही गुरू नानक भी समाज सुधारक के साथ साथ धार्मिक शिक्षक भी थे। उन्होंने समाज

टिप्पणी

में महिलाओं की स्थिति सुधारने के लिए कहा। उन्होंने कहा कि महिला जो राजाओं को जन्म देती हैं, उसके विषय में अनुचित नहीं बोलना चाहिए। उनके और अन्य सिखों की वाणी (शब्द) गुरू ग्रन्थ साहिब (सिखों के पवित्र ग्रन्थ) में संकलित की गई है।

वैष्णवी आंदोलन

आपने पढ़ा कि कबीर, नामदेव और गुरुनानक जैसे संतों ने परमेश्वर के निराकार रूप की भक्ति का प्रचार किया। इस अवधि के दौरान परमेश्वर के साकार रूप की भक्ति पर आधारित आंदोलन भी विकसित हुआ। यह आन्दोलन, जिसे वैष्णव आन्दोलन कहा जाता है, राम और कृष्ण पूजा पर आधारित है। जो भगवान विष्णु के अवतार माने जाते हैं। इस आंदोलन के मुख्य प्रतिपादक सूरदास, मीराबाई, तुलसीदास और चैतन्य थे। उनके अनुसार मुक्ति का मार्ग कविता, गीत, नृत्य और कीर्तन के माध्यम से ही है।

सूरदास (1483-1563) प्रसिद्ध शिक्षक बल्लभाचार्य के एक शिष्य थे। वह एक नेत्रहीन कवि थे जिनके गीत कृष्ण पर केन्द्रित हैं। उनकी कृति, सूरसागर में कृष्ण के बचपन एवं यौवन का वात्सल्यपूर्ण एवं स्नेहपूर्ण वर्णन है।

मीराबाई (1503-1573) ने भी अपने गीतों के माध्यम से कृष्ण के लिए अपना प्यार व्यक्त किया है। वह कम उम्र में विधवा हो गई थी लेकिन उन्होंने अपना जीवन अपने प्रभु की भक्ति में स्वयं को उनकी दासी मानते हुए व्यतीत किया। उनके पद अपने आप में ही अनूठे हैं और इसीलिए वे आज भी लोकप्रिय हैं।

वैष्णव आंदोलन **चैतन्य** (1484-1533) के प्रयासों से पूर्व में भी फैल गया। चैतन्य कृष्ण को विष्णु के एक अवतार के रूप में नहीं अपितु भगवान के सर्वोच्च रूप मैं मानते थे। वे कृष्ण की भक्ति कीर्तन के माध्यम से व्यक्त करते थे जो कि घरों में, मंदिरों में और यहाँ तक कि सड़कों पर जुलूस के रूप में भी किये जाते थे। अन्य भक्ति संतों की तरह चैतन्य भी जाति का भेदभाव न करके हर किसी का स्वागत करते थे। इन सभी संतों ने लोगों में समानता की भावना का प्रचार किया। राम की पूजा रामानंद (1400 ई. - 1470 ई.) जैसे संतों द्वारा लोकप्रिय की गई। उन्होंने राम को सर्वोच्च देवता के रूप में माना। महिलाओं एवं निर्वासितों का भी स्वागत किया गया। राम के सबसे प्रसिद्ध भक्त तुलसीदास (1532 ई. - 1623 ई.) थे जिन्होंने रामचरिमान की रचना की।

वैष्णव संतों ने हिन्दू धर्म के व्यापक ढांचे के भीतर अपने दर्शन को विकसित किया। उन्होंने धर्म में सुधार और साथियों में परस्पर प्रीति का उपदेश दिया। मुख्य तौर पर उनका दर्शन मानवतावादी था।

9.4 भक्ति और सूफी आन्दोलन का महत्त्व

आपको याद होगा कि भक्ति आन्दोलन एक सामाजिक धार्मिक आंदोलन था जिसने धार्मिक कट्टरता और सामाजिक कठोरता का विरोध किया। इन आंदोलनों में अच्छे चरित्र और शुद्ध

टिप्पणी

विचार पर बल दिया गया। ऐसे समय में जब समाज निष्क्रिय हो गया था, भक्ति संतों ने नए जीवन और शक्ति का संचार किया। इन आंदोलनों ने विश्वास की एक नई भावना जागृत की और सामाजिक और धार्मिक मूल्यों को फिर से परिभाषित करने का प्रयास किया। कबीर और नानक जैसे संतों ने समाज की पुनर्व्यवस्था पर बल दिया। समतावादी चिन्तन के साथ सामाजिक समानता के लिए उनके द्वारा की गई पुकार ने कई दलितों को आकर्षित किया। हालांकि कबीर और नानक का नए धर्मों की संस्थापना का कोई इरादा न था, परंतु उनकी मृत्यु के बाद उनके समर्थक कबीर पंथी और सिक्ख कहलाए। भक्ति एवं सूफी संतों का महत्व उनके द्वारा बनाए गए नए वातावरण में दिखाई दिया जिसने बाद की शताब्दियों में भारत के सामाजिक, धार्मिक और राजनैतिक जीवन को प्रभावी किया। अकबर की उदारवादी विचार धारा इसी माहौल की उपज थी जिसमें अकबर पैदा एवं बड़े हुए थे। गुरुनानक के उपदेश पीढ़ी दर पीढ़ी चलते गए और एक अलग धार्मिक समूह के रूप में अपनी अलग भाषा, लिपि गुरुमुखी और धार्मिक पुस्तक गुरुग्रंथसाहिब के रूप में सामने आए। महाराजा रणजीत सिंह जी के नेतृत्व में सिक्ख उत्तरी भारत की राजनीति में एक अजेय राजनैतिक शक्ति के रूप में विकसित हुए। भक्ति और सूफी संतों के बीच अंतर्व्यवहार से भारतीय समाज पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ा।

वहादत अल-वजूद के सूफी सिद्धांत उल्लेखनीय हिन्दू उपनिषदों के अत्यधिक समान थे। बहुत से सूफी कवि अवधारणाओं को समझाने के लिए फारसी के बजाए हिन्दी शब्दों का प्रयोग करना पसंद करते थे। इसीलिए सूफी कवि मलिक मुहम्मद जायसी ने अपनी रचनाएँ हिन्दी में लिखीं। कृष्ण राधा, गोपी, जमुना, गंगा आदि शब्द साहित्य में इतने प्रचलित हो गए कि एक प्रसिद्ध सूफी मीर अब्दुल वाहिद ने अपने ग्रंथ 'हकीकए हिन्दी' में उनके इस्लामी पर्याय स्पष्ट किए। यह अन्त:क्रिया जारी रही और अकबर तथा जहांगीर ने उदारवादी धार्मिक नीति का अनुसरण किया।

भक्ति संतों के प्रसिद्ध दोहों और भजनों ने संगीत में एक नवचेतना का जागरण किया। कीर्तन में सामूहिक रूप से गाने के लिए नई धुनें बनाई गई। आज भी मीरा के भजन और रामायण की चौपाइयाँ प्रार्थना सभाओं में गाए जाते हैं।

पाठगत प्रश्न 9.2

1. कौन सा कार्य वैष्णवी आंदोलन के इतिहास में मोड़ साबित हुआ?

   .....

2. आदिग्रंथ किस धर्म की पवित्र रचना है?

   .....

3. कबीर एवं गुरु नानक किस प्रकार जनता के बीच लोकप्रिय हुए?

   .....

टिप्पणी

4. ऐसा किसने कहा, ''महिलाओं के विषय में बुरा नहीं बोलना चाहिए जो राजाओं को जन्म देती हैं।''

.....

5. 'सूरसागर' के रचयिता कौन हैं?

.....

मध्यकालीन भारत में दर्शन

प्रमुख धार्मिक आंदोलन रहस्यवादियों द्वारा लाए गए। उन्होंने धार्मिक विचारों एवं विश्वासों में योगदान किया। भक्ति संत जैसे — वल्लभाचार, रामानुज, निम्बार्क एक नई दार्शनिक सोच लाये जिसका मूल शंकराचार्य के अद्वैत सिद्धान्त में था।

रामानुजाचार्य का विशिष्टाद्वैत

विशिष्टाद्वैत का तात्पर्य है संशोधित अद्वैतवाद। इस दर्शन के अनुसार अंतिम वास्तविक सत्ता ब्रह्म (ईश्वर) है एवं पदार्थ व आत्मा उसके गुण हैं।

श्रीकंठाचार्य का शिवाद्वैत

इस दर्शन के अनुसार परब्रह्म शिव हैं जो शक्ति से संपन्न हैं। शिव इस संसार के भीतर एवं बाहर व्याप्त हैं।

माधवाचार्य

द्वैतवाद है जो गैर द्वैतवाद एवं शंकराचार्य के अद्वैतवाद के विरुद्ध है। उनका मानना है कि ये संसार माया नहीं है अपितु मतभेदों से पूर्ण यथार्थ है।

निम्बारकाचार्य का द्वैताद्वैत

द्वैताद्वैत का तात्पर्य अद्वैतवाद। इस दर्शन के अनुसार ईश्वर ने स्वयं को संसार एवं आत्मा के रूप में प्रकट किया है। परंतु यह संसार व आत्मा ब्रह्म से भिन्न हैं। वे ईश्वर के सहारे से जीवित रह सकते हैं। वे अलग हैं, परंतु एक-दूसरे पर निर्भर हैं।

वल्लभाचार्य का शुद्धाद्वैत

वल्लभाचार्य ने वेदांत सूत्र एवं भगवद् गीता पर टीका लिखा। उनके अनुसार ब्रह्म श्रीकृष्ण थे जिन्होंने स्वयं को आत्मा और पदार्थ के रूप में प्रकट किया। परमात्मा और आत्मा अलग नहीं हैं अपितु एक हैं। उन्होंने शुद्ध अद्वैतवाद पर बल दिया। उनका दर्शन पुष्टिमार्ग (अनुग्रह की राह) एवं सम्प्रदाय रुद्रसंप्रदाय के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

टिप्पणी

आपने क्या सीखा

- भक्ति और सूफी आंदोलन हिन्दू और इस्लाम के अन्तर्गत उदारवादी आंदोलन थे जिन्होंने इंसान और भगवान के बीच के नए और अधिक व्यक्तिगत संबंध पर बल दिया।
- मनुष्य का सार्वभौमिक प्रकम और भाईचारा, सूफी आंदोलनों का संदेश था।
- एक ईश्वर की अवधारणा में अपने विश्वास की वजह से सूफी सन्त हिन्दू विचारों के साथ एक वैचारिक संबंध स्थापित करने में सक्षम हुए।
- भक्ति आंदोलन नयनार और अलवर के मध्य विकसित हुआ और उन्होंने भक्ति पर आधारित देवपूजा की एक नई विधि पर बल दिया।
- भक्ति संत निर्गुण और सगुण उपासकों में विभाजित हो गए।
- निर्गुण की अपेक्षा सगुण उपासक देवता को राम या कृष्ण के एक निश्चित रूप में देखते हैं।
- भक्ति और सूफी संतों ने मध्यकालीन भारतीय समाज में एक उदारता की नीवं डालने में तथा स्थानीय भाषाओं और उनके साहित्य में जबरदस्त विकास को बढ़ावा दिया।

पाठान्त प्रश्न

1. इस्लाम में सूफी आंदोलन ने प्रगति कैसे की?

   .....

2. आप चिश्ती सिलसिले और सुहरावर्दी सिलसिले में क्या अन्तर देखते हैं?

   .....

3. भक्ति संत और सूफी संत एक ही सिक्के के दो पहलू थे। विस्तार से बताएं।

   .....

4. गुरु नानक और कबीर के बीच क्या समानता थी?

   .....

5. भारत में वैष्णव आंदोलन पर एक अनुच्छेद लिखें।

   .....

टिप्पणी

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

9.1 1. रूढ़िवादी सुन्नी विचारों वाले विद्वान

2. इस्लाम क्षेत्र के रूढ़िवादी सिद्धांत

3. अल-हुजवरी

4. चौदह

5. शरीया

6. अजमेर

7. शेख नसीरूद्दीन महमूद

9.2 1. भागवत पुराण

2. सिक्ख धर्म

3. ये विचार हिन्दू एवं मुस्लिम परम्पराओं से लिए गए थे। उन्होंने सरल भाषा का प्रयोग किया।

4. गुरु नानक

5. सूरदास